ग्रामपाठशाला

और

निकृष्ट नौकरी नाटक।

जिसे लाला काशीनाथ खत्री (सिरसा ज़िला इलाहाबादनिवासी) जी ने आधुनिक नौकरियों की शोचनीय दशा दिखाने के लिये रचा और जिसे काशीनिवासी बाबू रामकृष्ण खत्री जी ने रसिकजनों के विनोदार्थ प्रकाश किया।

काशी।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुई।

सन् १८९३ ई०।

दूसरी बार १००० मूल्य ~)

नोट—यह ग्राम पाठशाला नाटक ... वर्ष हुए तब लिखा गया था। यह चित्र उन नये पाठशालाओं का है जो श्रीमान् ओनेरिबल सर विलयम म्योर साहब बहादुर की आज्ञानुसार ऐसे ग्रामों और दिहातों में बैठाई गई थीं जहां उस समय से पहिले किसी ने शिक्षा का नाम भी नहीं सुना था परन्तु अब समय पाकर उन की दशा तब से उत्तम है, इस अभागी पश्चिमोत्तर देश की अब कहां ऐसे भाग्य हैं कि प्रजा के वैसे हितेच्छू और उन्नत्यभिलाषी गवर्नर आवें उन के चरणारबिन्द के हटतेही इन देश की शिक्षा प्रकारण की कैसी दशा हो गई, सैकड़ों बड़े और छोटे मदरसे जहां प्रजा के सहस्रों बालक शिक्षा दिये जाते थे उठा दिये गये समय जो चाहै सो करै॥
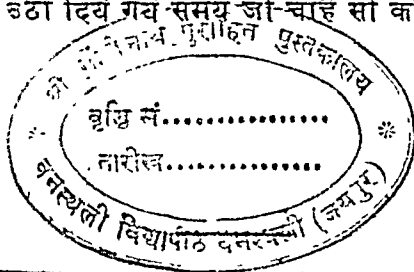
भूमिका ।

आजकल कितने विद्वान् और देशहितैषियों को चिर से यह अभिलाषा है कि नाटकों के रचना की यथोचित वृद्धि हो और वे इसके लिये बहुत कुछ परिश्रम कर रहे हैं, परन्तु कोई २ जन ऐसे हैं जो नहीं जानते कि इसकी रचना से क्या प्रयोजन सिद्ध होता है। यहां की अपेक्षा बम्बई और बङ्गाल में सभ्यजनों ने इसका बहुत प्रचार बढ़ाया है और वहां सर्वसाधारण लोगों की रुचि इसकी ओर ऐसी बढ़ी हुई है कि बहुधा वहां के नाट्यसभाओं को सहस्रों रुपयों का लाभ होता है।

नाटक में लोगों के सुरीति से मन बहलाव और उपदेश के अर्थ मनुष्य के गुण अवगुण, चित्त की चञ्चलता, सङ्कल्प, विकल्प, भूल, चूक, त्रास, भय शोक विषाद मन की लहर और तरङ्गों की नकल करके इस रीति से दर्शा देते हैं कि असल और नकल में भेद नहीं रहता और तमाशा देखनेवालों के चित्त में बड़ाही असर होता है बहुधा सभ्य देशों में विद्वान्जन नाटक की रचना के द्वारा मदिरापान, वस्त्र व्यसन परस्त्रीगमन, असभ्य व्यवहार, बहुत स्त्री व्याहना, कायरी, चोरी काम क्रोध मोह दुःशीलता, लम्पटता आदि अवगुणों की निन्दा ऐसी अपूर्व रीति से करते हैं कि बहुतेरे दुष्टस्वभाव इनके प्रभाव से सुधर कर और कुछ के कुछ होकर नाट्यभवन से निकलते हैं।

अब ध्यान दीजिये कि यह कैसी सुन्दर रीति है कि मनबहलाव भी हो और उसके संग ऐसा उपदेश भी हो क्या यह हमारे देश के भांड़ों के असभ्य बकवाद और निर्लज्ज खिल तमाशों और वेश्याओं के नाच से सहस्रों गुण बढ़कर नहीं है प्राचीन काल में इस देश और यूनान में नाटकरचना का बहुत प्रचार था और यूनानीभाषा के नाटक जो आज तक बच रहे हैं ऐसे ललित मनोहर और अपूर्व ढङ्ग से लिखे हुये हैं कि बराबरी तो बहुत दूर है कोई उनकी नकल तक इस समय नहीं कर सका बड़े आनन्द का विषय है कि हमारी मातृभाषा में भी अब धीरे धीरे नाटक लिखे जाने लगे हैं और लोगों की रुचि इस तरफ हो चली है जो नाटक आज तक भाषा में लिखे गये हैं उनमें विद्यागुणभूषित कविमण्डलशिरोमणि श्रीयुत बाबू हरिश्चन्द्रजी और श्रीलालानिवासदासजी के लिखे हैं मिर्जापुरवासी श्रीयुत पण्डितवर बद्रीनारायणजी की रुचि इस तरफ बहुत अधिक है उन्होंने गद्यपद्यों में दो तीन बहुत अपूर्व नाटक रचे हैं जब वे प्रकाशित होंगे तो वे भाषा में अपने ढङ्ग में आपही होंगे अब ऐसेही सुजन और विद्वान् अपने देश के सच्चे उपकारी होते हैं श्रीयुत पण्डित सालिगरामजी ने इलाहाबाद में नाटकरचना की वृद्धि के हेतु एक सभा स्थापित की थी वह अभी तक मौजूद है परन्तु उनके वहां से चले जाने के कारण अब उसकी कुछ अच्छी दशा

नहीं है बड़ा पश्चाताप है कि हमारे देशवासियों के सब काम ऐसेही होते हैं; करते हैं अवश्य परन्तु पूरा कोई नहीं उतारता।

मेरे यह दो नाटक प्रथम हरिश्चन्द्र चंद्रिका और कवि-वचनसुधा में मुद्रित हुए थे मैं उनको एकबार पढ़कर भुला देने से अधिक प्रतिष्ठा के योग्य नहीं समझता क्योंकि वह नाटक रचना के विषय में मेरे प्रथम उत्साह के फल हैं और यह स्वभाविक है कि पहिला कोई उद्योग सब प्रकार पूरा नहीं उतरता परन्तु मेरे कितने विद्वान् मित्र विशेष कर हमारे परम प्रिय मित्र श्रीयुत बाबू रामकृष्ण जी ने बहुत कुछ प्रेरणा की कि उनको अवश्य ग्रंथाकार छपवाना योग्य है, हिन्दी पढ़ने वालों की नाटकों के पढ़ने में बहुत रुचि बढ़ती जाती है इसहेतु मैं सकुचा कर अपने उक्त मित्र को उनके ग्रंथाकार मुद्रित करने की अनुमति देता हूं और आशा करता हूं कि विद्वज्जन मेरी भूल चूक को क्षमा करके सुधार लेंगे॥

मै अंत में फिर अपने सुहृदवर श्रीयुत बाबू रामकृष्ण जी का धन्यवाद करता हूं जिनके विद्योत्साह द्वारा यह ग्रंथ मुद्रित हुआ॥

१५ फिब्रुवरी १८८३ { काशीनाथ खत्री
सिरसा (इलाहाबाद)

ग्रामपाठशाला नाटक।

मंगलाचरण।

सूत्रधार (नटी से) आज यह सभा कैसी शोभा को प्राप्त है। मुन्शी, और गुरू अभ्यामा बांधे हुए लड़कों के दण्ड के लिये लकड़ियां हाथ में लिये दिहाती सादे वस्त्र पहिने हुए ऊपर की श्रेणी में कैसे प्रसन्न वदन बैठे हुए नीचे की श्रेणी में पाठशाला के बालकों को धमका रहे हैं कि चुप हो जाओ अब तमाशा आरम्भ होता है हे प्रिये ! तुम्हें आज कोई ऐसा सुन्दर तमाशा दिखना चाहिये जिस में यह सब अत्यन्त प्रसन्न हो जांय।

नटी -- स्वामी बहुत सुन्दर आपने विचार किया आज देखिये यह सायङ्काल का समय भी कैसा प्यारा मालूम होता है सूर्य अस्त हुये कुछ अभी बहुत समय नहीं हुआ तो भी यह पूर्णिमा के चन्द्रमा की चाँदनी कैसी खिली हुई है आकाश कैसा निर्मल है कैसी सुहावनी शीतलमन्द पवन चल रही है कहीं २ तारे चमकते हुये सुन्दर हीरे के समान जड़े हुये कैसे मनभावने लगते हैं, स्वामो आज कोई ऐसा अभिनय रचिये जो इन्हीं महाशयों के विषय में हो और जिसको देखकर वे प्रसन्न हो जायँ।

सूत्रधार—बहुत उत्तम प्यारी, आज हम इन महाशयों को ग्रामपाठशालानाटक दिखलावेंगे जो श्रीयुत कविवर लाला दयालदासजी दिल्लीवाली टण्डन खत्री आगरा-नगरनिवासी के परम चतुर और गुणवान पुत्र श्रीयुत बाबू काशीनाथजी का रचा हुआ है।

(पर्दे के भीतर चले गये)

(स्थान डिप्टी इन्स्पेक्टर साहिब का दफ्तर)

डिप्टीइंस्पेक्टर—(दफ़्र में बैठे हुये और सबडिप्टी इंस्पेक्टर को आते हुये और बन्दगी करते देखकर) आइये मीर साहब अब के तो बहुत दिन दौरे पर रहे, बैठिये। (सबडिप्टी बैठते हैं) कहिये मदर्सों का क्या हाल है?

सबडिप्टी –(ज़रा धीमी आवाज़ से) जी हां सब हाल अच्छा है मगर बाजे २ मदर्में तो बिल्कुल अबतर हैं उनका मुझे बड़ा फिकर है। इन्स्पेक्टर साहब के दौरे के दिन भी करीब आ गये मुदर्रिस बिचारे क्या करें मां बापही लड़कोंको मदर्से में नहीं भेजते, आजकल फ़सल के दिन हैं सब खेतों में भिड़े हुये हैं परगने मूढ़गढ़ के सुरखपुर मदर्से में तो आज महीनों से एक लड़का भी नहीं आता।

डिप्टी—अजी वहां का मुदर्रिसही नालायक होगा, उसे निकालकर कोई दूसरा तजवीज करो कि इम्तिहान से पहिले जाकर कुछ लड़के जोड़ बटोर ले आप इन्स्पेक्टर साहब का मिजाज जानतेही हैं, नहीं तो फजीता करेंगे।

सबडिप्टी—बहुत अच्छा, मजलुमखां अभी कल नारमैल स्कूल से पढ़कर आया है उसे वहां कर दीजिये।

डिप्टी—(चपरासी से) फत्तेखां! उस लड़के को बुलाओ जो कल दफ़्तर में बैठा था, चिम्मन जुलाहे के यहां ठहरा हुआ है।

चपरासी—बहुत अच्छा हुजूर। [गया]

(चपरासी मियां जुलाहे के द्वार पर जाके पुकारते हैं मजलुमखां सरिश्ते के आदमी की आवाज पहचानकर और मन में खुश होते हुये कि यार बहुत दिनों तो वेकार न बैठना पड़ा, अपना मैला पैजामा और सिर के बाल सम्हालते हुये दौड़कर आते हैं)

मजलूमखां—(चपरासी से) कहिये दोस्त, कुछ खुशखबरी लाये हो?

चपरासी—आज मुकुन्दरखां सबडिप्टी दौरे पर से आये हैं, तुम्हारे लिये एक अच्छी आसामी तजवीज हुई है, झटपट कपड़े पहिनकर चलो बाबू साहब अभी दफ़्तर मेंही हैं। कहो अब तो मेरा इनाम सही हुआ?

मजलूम – हां हजरत ! अब क्या शक है (दौड़कर लम्बे २ डग भर कर घर में जाता है औ जुलाहन से) अजी कोई बड़े मियां का पैजामा होय तो थोड़ी देर के वास्ते निकाल दो, मेरा बहुत गन्दा हो गया है, कल भूल गया नहीं तो खड़े घाट धुलवा लाता क्योंकि मेरे पास यही एक है पहिली तनख्वाह में अब के कपड़ेही बनवा लूंगा।

जुलाहन – भइया, हमारे यहां पैजामा कहां से आया। तेरे मामूं को कुछ पहिनने का शौकही नहीं है नंगे बदन गये बाजार में थान बेंच आये; बेटा करें क्या पेट से ज्यादा तो बचताही नहीं जो कपड़ा और लत्ता बनवावें, देखूं, नबी के यहां होय तो मांगि लाती हूं (गई और वहां से लेकर आती है और देती है) मैं दर्जी को नमूना दिखलाने के बहाने लाई हूं मैला न होय आतेही उतार कर रख देना।

मजलूमखां—(अंगा, पैजामा पहिनकर बाल सम्हालते हुये रुमाल फटकारते हुये और कुछ अकड़ते हुये चपरासी के साथ जाते हैं और उससे रास्ते में पूछते हैं) क्यों मियां फत्ते ? तुम्हारे यहां के अफसरों का कैसा मि-जाज है ?

चपरासी—जी बहुत अच्छा है, बाबू कृपानाथ डिप्टी इन्स्पेक्टर तो बिचारे देवता आदमी हैं, उन्होंने न आज तक किसी पर जुर्माना किया, न किसी से तू तड़ा करके बोले, वाह ! वाह ! बहुत अच्छे आदमी हैं, खुदा करे सब को ऐसा अफसर मिले। पर भाई मुछन्दरखां सब डिप्टी जिसका तुम्हारी तरफ इलाका है बड़ाही बुरा आदमी है वह तो मुदर्रिसों के हक में ऐसा है जैसा भेड़ बकरियों के झुण्ड में भेड़िया, खुदा उससे पनाह रक्खे।

मजलूम—अजी, साहब जब हम अपना मेहनत से काम करेंगे तो कुछ उनका सिर थोड़ेही फिरा है कि नाहक को सतावेंगे वे ऐसे होंगे तो उन निमकहरामों के लिये होंगे जो सर्कार से तनख्वाह पाते हैं और काम नहीं करते।

चपरासी—हांजी यही बात है।

(इतनी बात करते हुये शरिश्ते में पहुंच गया और बड़ी झुककर बन्दगी करके बैठ गया)

डिप्टी—(लिखते हुये निगाह उठाकर) मजलूमखां तुम आया।

मजलूम—हां, खुदावन्द हाज़िर हूं।

डिप्टी—मनसुखराय ! इसे सुरखपुर के मदरसे में तकर्र्री का परवाना लिख दो ।

मुहर्रिर—(मज़लूम को इशारे से पास बुलाकर और काग़ज़ उठाकर लिखते हैं और कहते हैं) कहो साहब हमें भूल जाओगे ।

मज़लूम—(हाथ जोड़कर) वाह साहब ! आप मेरे अफसर और मुरब्बी हैं आपही की इनायत में मेरा सब कुछ भला है ।

मुहर्रिर—बस रहने दीजिये खाली बातोंही से काम नहीं चलता ।

(इतनेही में सब्डिप्टी पुकारते हैं) "मज़लूमखां" "इधर आओ ।"

मज़लूम—जनाब हाजिर हुआ ।

सब्डिप्टी—देखो सुरखपुर बहुत अच्छा गांव है, लोग तुम्हारी बहुत खातिर करेंगे तुम्हें बखूबी खुराक लड़कों से मिलेगी, वहां का ज़िमींदार बड़ा भलामानस है, तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न होगी, अभी तुम्हारी ५) रुपये माहवारी तनख्वाह मुकर्रर हुई है, जब हम आवेंगे और मदरसे में तरक्की पावेंगे तो फिर बढ़ा दी जायगी खूब मेहनत से लड़के जमा करना क्योंकि साहब इन्स्पेक्टर के इम्तिहान को सिर्फ दो महीने रह गये हैं ।

मज़लूम—हुजूर जहां तक मुझ से होगा कोताही न करूंगा। (डिप्टी साहब दस्तखत करके परवाना हाथ में देते हैं, और कहते हैं) कल सवेरे रवाने हो जाना।

मज़लूम—(बहुत झुककर बन्दगी करके घर जाता है, और प्रातःकाल उठकर गठरी बाँध, डोर लोटा कन्धे पर डाल पैजामा चढ़ा, जूता हाथ में ले मदरसे को रवाना होता है)

मज़लूम—(रास्ते में मनही मन में) अब तो अल्ला मियां ने हमारे घर की सुध ली, खाना तो लड़कों से मिलेहीगा और ऊपर से जो कुछ उनसे मिलेगा उसी में कपड़ों का काम चल जायगा, पांचों रुपये पूरे बचा कर अब्बा से कह दूंगा कि लो अब १० बीघे खेती कर लो मेरी तनखाह पोत के लिये बहुत होगी, तब तो घर में खूब अन्न गँजा रहेगा, और गांववाले कहेंगे कि अब तो फलाना भी अच्छा गृहस्थ है, अभी नहीं एक दो बरस बाद अब्बा से कहूंगा कि लो अब सब तरह से सुभीता है मेरा ब्याह कर दो फिर तो आनन्द से कटेगी, बीबी भी कमाऊ जान के बहुत खातिर करेगी या खुदा! तू ऐसी सब की सुन मुदर्रिसी है या राजाई नौकरी, इसमें कुछ शक नहीं, आनन्द से बैठे हुये लड़के पढ़ाया किये जब मन आया उठ खड़े हुये

जब जी चाहा घर हो आये कोई रोज़ तो पूछने आताही नहीं, देखो तुलसीराम कैसा बेवकूफ है जा के तहसीली में नौकरी की है बिचारा दिन और रात पीसता है फिर भी तहसीलदार उसपर चिल्लाया करते हैं हमारे १०) तक भी इसी नौकरी में हो जायँगे तो फिर दूसरी को जी भी न करेंगे (यही सोचते २ गांव के समीप आ गया और एक किसान को खेत काटते हुये देखकर पूछने लगा) भाई मुरखपुर यही है जो साम्हने दीखता है ?

किसान – हां मियां, जेही हने (उनकी अनोखी चाल देख कार) जा गामें कछू तमासा करे आये हो ?

मुदर्रिस – लाहौलविलाकूव्वत। अरे भाई हम यहां के मुदर्रिस हो के आये हैं।

किसान – जा गामें नित्त नये गुरु आवत हैं एकौ नाय टिकात, विचारे करें का कोउ पढ़त तो हतेही नाय, एक सरकार का येह दण्ड हते।

मुदर्रिस – देखो जी हम सब दुरुस्त कर लेंगे (मन में) यहां लोग पढ़ने के शौकीन नहीं जँचते. (गांव के भीतर जाकर और एक बनियें की दूकान पर खड़े होकर पूछता है) क्यों जी मदरसा कहां है ?

बनियां – सरकार, हम नांय जानत, एक लाला तो वमें (उँगली से बताकर) सीबालकसींघ ठाकुर के द्वार

पर पढ़ावत हते बोऊ १५ दिन तें अपने घर कूं गये हैं कहां सरकार तुम्हार कहां से आउब होत है (डर से अपनी अनाज की डलिया ढकाता है) तह-सीलदारी से ?

मुदर्रिस - नहीं, भाई मैं यहां का मुदर्रिस हो के आया हूं।

वनियां—(कुछ चैतन्य होकर) तो सरकार सोझेही डगरा धर लें।

(मज़लूम वहां पहुंचकर द्वार पर खड़े होते हैं और सौवालकसिंह को पूछते हैं उन्हें खड़े देखकर एक लड़का घर में दौड़कर जाता है और ठाकुर को बुला लाता है)

सौवालकसिंह – मियांसाहव तुहार कहां से आउब होत है, आवह! वैठह (लड़के से बोले कि घर में से पीढ़ी ले आ)

मुदर्रिस – (वैठकर) ठाकुर साहव मैं शहर से यहां का मुदर्रिस हो के आया हूं।

सौवालक०—(हुक्क़ा पीते हुये) तुहार आउब नीक भयो (धीमी आवाज से ज़वान दावकर) परन्तु मियांसाहव इहां तो कोउ पढ़तही नांय है हमरेही ऐ द्वय छोरा तहसीलदार साहव के हुकम ते पढ़त हैं पहिलेहूँ विचारू लाला जड़ी समर करत हते पर कोउ नांय

मानत रह्यो जा गांव के ऐसे छौड़ा विगड़े हतें, काही जी उनको अब कौन गाम्में जाव होव ?

मुदर्रिस—वह तो साहब मौकूफ़ हुए, बसबब गफ़लत और सुस्ती के।

सौवालक - राम! राम! उनको जामें कौन तकसीर रही, जब छोराही नांय पढ़ें तो उन कर कौन दोष ?

(ठाकुर का छोटा लड़का जो पास खड़ा था यह सुन कर अपने बाप से प्रसन्न होकर कहता है)

संपतिया—काहा! भली भई जो वह गुरू बखास भयो ससुर हत्यारो नाहक नाहक मौंड़ा कूं कसाई की नांई मारत रह्यो।

सौवालक—(क्रोधित होकर और हुक्के की नें निकालकर) धत तोरी ऐसी तैसी गुरुन को बड़ो पद होत है कोउ ऐसे हू कहत है।

मुदर्रिस—(खड़े होकर) हैं! हैं! जाने दीजिये वेसमझ बालक है, अभी क्या जाने बच्चा है।

सिवालक -(बैठकर) देखत हौ मियां साहब जा गांव के छोरान कों ऐसो ढंग हते जब इनके ऐसे लच्छन हैं तो का पढ़िहैं आपन कपार, इन कू एकउ अच्छर न आई, मिंया साहब काहू और गाम्में आपन मदरसा उठा ले जाओ तो बहुत नीक होय।

मुदर्रिस (मन में झुलसता हुआ और कहता हुआ) जहां यह हाल है वहां खुदा खैर करे भला यहां किस बात की उम्मेद हो सक्ती है (प्रगट) अजी देखियेगा मैं कैसा लड़कों को सुधारता हूं. ज़रा कल से मुझे पढ़ाना शुरू करनें दीजिये, पहिले मुदर्रिस का मालूम होता है कुछ रोब न था।

सिवालक (मन में) इय गुरू तो इय महीना आपन आपन करतूत दिखाय गये अब तुहार और बाकी हते (प्रगट) हां मिंया साहब हूं तो तुम्हरे देखे ही से जान गयो के जे सारे कज्जाक तोंह से ही मानेंगे।

मुदर्रिस- ठाकुर साहब कोई मुसलमान का घर बता दीजिये कि हुक्का ले आऊं सुबह का थका हुआ शहर से चला आता हूं राह में पानी तक न नसीब हुआ।

सिवालक—(अपने पुत्र से) जारे मोड़ा रहमनिया के घर ते हुक्का तो लिवाय ला (बालक दौड़कर जाता है और ले आता है) जा मीयां साहब कूं चबेना खाइवे कूं लेआय दे (मुदर्रिस से) खरयान सून हते हूं तो जात हूं तब ते तू पीढ़ह।

(मुदर्रिस चबेना भोजन करते हैं और सायंकाल तो होही गया था थके होने के कारण लेटते ही सो गया

और प्रातःकाल होते ही सिनालक सिंह के द्वार पर आकर पुकारा)।

मुदर्रिस—समपतिया रे २ हमारे साथ चल हमें मदरसे के लड़कों का घर बता दे, हम उन्हें पकड़ लावें, नहीं तो वह सब दिन चढ़ते ही वारियों में खेलने निकल जांयगें।

(भीतर से) 'मौलवी साहब बैठः हूं जंगल हो के आवतहूं' (थोड़े काल में समपतिया धोती बांधता हुआ द्वार पर आकर और साथ होकर कहता है)

समपतिया—इह कैंती चलः हरभजना, तुलसीया और कन्हैया कूं बुलावत चलीं (पहिले घर पर पुकारता है) हरभजना रे हरभजना २ पढ़े चला नये मिंया आए हैं खड़े बुलावत हैं (भीतर से एक स्त्री की आवाज़ आई) 'आज न जाई' (फिर दूसरे द्वार पर पुकारता है) तुलसीया रे २ तुलसिया पढ़ेः चलाः।

(इतना सुनतेही और मुदर्रिस को द्वार पर खड़े देख कर उसका बाप निकल आया और कहने लगा)

बाप—जा सारे कूं आज जरूर धरौ वड़ो कजाक हो गवा है दिन भर महतारी सूं लड़त है और छोटे भाइन और वहनन कू कूंचत रहत है।

मुदर्रिस—आप लोग सिरफ़ लड़का मेरे हवाले कर दीजिये देखिये फिर मैं कैसा सुधारता हूं कि यह सब नटखटी भूल जायगी।

(इतनेही में तुलसिया दूसरी तरफ़ से निकल कर भागता है और उसका वाप देखकर मुदर्रिस से कहता है)

वाप—धरह! मुनशी धरह! मेरो सार जाये न पावे।

(मुदर्रिस और समपतिया उसके पीछे दौड़ते हैं और वड़ी दूर जाकर उसे पकड़ कर लाते हैं और वह द्वार पर अपनी माता को देखकर अधिक रोता है और वह मोह वस कहती है)।

माता—आज, मुनशी जाये द: काल सू पढ़े जाई बालका वहुत रोवत है कछु हो जाई।

मुदर्रिस—[वड़े क्रोधित होकर, और लड़के की बांह छोड़ कर] बस तुम्ही लोग तो लड़कों का मोह करके सत्यानास करो हो (लड़का घर में भागता देखकर मन में) या खुदा भली आफ़त में पड़े, भला यहां क्या मदरसा जमेगा अफ़सर लोग यह काहे को मानेंगे कि यहां लड़कों के यह ढंग हैं, वह तो यही कहेंगे कि मुदर्रिस ने कुछ न किया होगा यहां तो नौकरी रहनी भी कठिन जान पड़ती है, खाना मिलना तो दर किनार।

(ऐसे ही सब गांव में द्वार २ फिर फिर कर और बड़े श्रम और कठिनता से पांच लड़के पकड़ कर और निरास होकर मदरसे में जाकर बैठता है)

मुदर्रिस—(मन में) लड़के पढ़ाना बड़ी हत्या होय है, एक होय जिसकी खुशामद भी करी जाय किस किस को मनाऊं हमें क्या है जी, जो कोई आवेगा पढ़ा देंगे आवे न तो हम क्या करें जब तक नौकरी है तभी तक सही ।

[इसी प्रकार रोते पीटते दो अढ़ाई महीने बीत गये; एक दिन एक समीप के भयपुरे गांव के मुदर्रिस ने आन कर चैतन्य किया कि सबडिप्टी इन्स्पेक्टर इस परगने में दौरा करते करते आगये हैं चाहे कल तुम्हारे यहां भी आवें इसके सुनतेही मुदर्रिस राम के प्राण हवा हो गये और जी में सोचने लगे कि बस आजही तक की तनख्वाह भाग में लिखी थी, रात भर विचारा दुखिया चिन्ता में सोया भी नहीं था, प्रातःकाल कुछ आंख लगी थी कि इतने में टट्टू पर सवार खट खट करते हुए एक बावर्ची और घसियारा साथ लिये मियां मुकन्दर खां आ उपस्थित हुए; उनके आदमियों में से एक मुदर्रिस को सोता हुआ देखकर झटके से चादर खींचकर बड़ी धमकी से कहता है " अभी तक सोते हो, जलदी उठो, मीर साहब आ

गये " वह घबड़ाकर उठता है और सामने जाकर बड़ी झुककर बन्दगी करता है और वह बड़े घमंड से बंदगी के उत्तर में केवल सिर हिलाकर आज्ञा करते हैं]

सबडिप्टी – मज़लूम, जल्दी लड़के जमा करो, हमें दुपहर तक चौपटपुरे का मदरसा ज़ाकर देखना है।

(मुदर्रिस दौड़कर जाता है और बावर्ची उसके पीछे जाकर कहता है)।

बावर्ची – अजी घास, दाने और खाने का बंदोबस्त तो करते जाओ, नहीं फिर देर हो जायगी तीन सेर घोड़े को दाना अढ़ाई सेर आटा आध सेर घी और आध सेर दाल दिलवाते जाओ।

मुदर्रिस—(मन में) यह तो बड़ी हत्या ठहरी क्या हम ५) रुपैया महीने में खांय क्या इन्हें खिलावें, फिर सोच कर कि अब एक या दो रुपये खरचे बिना किसी तरह न बनेगा, अगर न दूंगा तो दस रातों से हलाल करेंगे (प्रगट) आओ चलो बनिये से उधार दिलवा दूं बीसवीं तारीख आज हो गई तनखाह अभी तक तहसीली में नहीं आई दो वखत हैरान हो आया, गरीबों की अल्ला के घर भी सुनवाई नहीं, आज काल एक २ कौड़ी से तंग हूं।

(बावर्ची को साथ लेकर मुदर्रिस वनिये की दूकान पर जाता है और मुफ्तखोरे मियां सब जिंस की गांठ बांधकर कृपा दृष्टि करके कहते हैं)

बावर्ची –(मुदर्रिस से) बस दो मुरगियां, चीनी और दूध और मंगवा दो।

मुदर्रिस—(मन में) या अल्ला! आज यह भत्खोवे जान पड़ता है मेरी पूरी महीने भर की तनखाह हज़म करेंगे (फिर सोच करके कि बिन दिये किसी प्रकार छुटकारा नहीं कहने लगा) अजी यह हिन्दुओं की वस्ती है यहां कहां मुरगी. अलवत्ते दूध मिल जायगा।

बावर्ची – मैं नहीं जानता भाई अगर मीर साहब नाराज़ हो जांय तो, वह तो बिला मुरगी रोटी ज़बान पर नहीं धरते कहीं न कहीं से ज़रूर ढूंढ़ो।

मुदर्रिस—(भय भीत होकर) भाई मैं तो अव लड़के बुलाने जाता हूं उन से पूछूंगा अगर कहीं मिल जायंगी तो ज़रूर मोल ले आऊंगा।

[मुदर्रिस जाता है और प्रत्येक द्वार पर जाकर बड़ी खुशामद करके और हाथ जोड़ जोड़ कर बड़ी कठिनता से १० लड़के बुलाकर लाता है।

(सब डिप्टी आते हैं)

सबडिप्टी—सब लड़के हाज़िर हो गये ? इतने ही लड़के।

लाओ रजिस्टर, ४० लिखे हैं उस में से १० ही हाज़िर ! ! !

मुदर्रिस –(बड़ी नम्रता से हाथ जोड़ कर) हुजूर से मैं पहिले ही कह चुका हूं कि इस गांव वालों को बिलकुल पढ़ने का शौक नहीं मैं क्या करूं जब वे लड़कों कोही मदरसे में नहीं भेजते, ठाकुर साहब से पूछ देखिये. मैं दस दस वक्त पकड़ने जाता हूं नहीं आते और सिवाय आज कल फ़सल के दिन हैं सब खेतों में भिड़े हुए हैं ॥

सबडिप्टी—(क्रोधित होकर) बस चुप रहो, तुम बड़े नालायक और सुस्त हो, तुम से सिवाय हराम के खाने के और कुछ नहीं हो सक्ता इसीलिये हम ने तुम्हें यहां भेजा था ? गदहा बेवकूफ़ कहीं का ॥

[सब डिप्टी परीक्षा लेते हैं और झटक २ पटक २ कर चिल्ला २ कर प्रश्न करते हैं जिससे वे लड़के भी जिनको मुदर्रिस ने खूब पढ़ाया था और जिनके अच्छी परीक्षा देने की विचारे को आशा थी कुछ उत्तर न दे सके हक्के बक्के होकर देखने लगे । अब मुछन्दर खां यों कैफ़ियत इम्तिहान की लिखते हैं]

'इस मदरसे की कोई सफ़ दुरुस्त नहीं, लड़कों को सब पिछला फ़रामोश, हाज़री तुलवा निहायत कम, ४०

मुन्दरज रजिष्टर में से १० हाज़िर मिले मुदर्रिस की सुस्ती और ग़फ़लत के सबब यह मदरसा बिल्कुल अबतर है, मालूम होता है इस ने महीनों से लड़कों को सबक़ नहीं पढ़ाया, उस पर दो रुपया जुरमाना किया गया और सख़्त ताक़ीद कर दी गई कि अगर दूसरे दौरे में मदरसे में कुछ तरक़्क़ी न देखी जायगी तो बरख़ास्त कर दिये जावेंगे।

यह लिखकर सबडिप्टी मुदर्रिस के बंदगी का उत्तर दिये बिना घोड़े पर चढ़ खट खट करते हुये जाते हैं और मुदर्रिस जान करके कि २) जुरमाना किया है इस कठिन दंड के क्षमा कराने के अर्थ रोता हुआ और बड़ी नम्रता से निवेदन करता हुआ घोड़े के पीछे २ दौड़ता है]

मुदर्रिस - (बड़ी दीनता से) खुदावंद ! दो रुपया मुझ ग़रीब को बहुत है, मैं मर जाऊंगा, माफ़ फ़रमाइये, सरकार मैं बिलकुल बेक़सूर हूं हुज़ूर की जान ओ माल को दुआ करता रहूंगा।

सबडिप्टी – कोई हमारी भी यह उज़्र सुनेगा इन्सपेक्टर साहब तो हमारी जान मारेंगे तुम्हारा क्या बिगड़ेगा, बस चले जाओ ज़्यादा बकबक करोगे तो मौकूफ़ कर दिये जाओगे, जाओ हटो।

मुदर्रिस -- [अत्यंत निरास होकर लौटता है और जी में

कहता है] या अल्ला बड़े निर्दयी से पाला पड़ा एक रुपये से ऊपर खा गया दो रुपये जुरमाना कर गया, बचे दो रुपये, कहो क्या इस में मैं महीने भर खाऊं क्या घर वालों को ज़हर दूं गांव में यहां एक कौड़ी का किसी का सहारा नहीं बलकि मैं उलटे अपने पास से किताबों के दाम देता हूं फिर भी लड़के पढ़ने को नहीं आते हाय ! कैसे बिचारे दीन दुखियों के प्रान बचें धिक्कार है ऐसी नौकरी करना, भीख मांग कर पेट भरना अच्छा पर खुदा ऐसी नौकरी न करवावे जिसमें कुसूर किसी का और मारा जाय कोई और, जब इतनी खुशामद और मिन्नत से भी लड़के न पढ़ने आवें तो कहिये मुदर्रिस ईंट पत्थरों को पढ़ावे, ऐसी तैसी में गई यह नौकरी भाई इससे तो वही अपने घर का उद्यम अच्छा, एक बाज़ार से सेर भर सूत मोल लिया दूसरे बाज़ार एक थान बनाकर बेच लिया जो अपने भाग में बदा है ॥) या ।, मिल ही रहते हैं किसी की खुशामद तो नहीं करनी पड़तीं, हाय, हाय ! यह पढ़कर हमने फल पाया हाय यही हमारा रातों को उकलेदिस तवारीख़ और जबर मुक़ाबला रटने का नतीजा है ! हमारी तो उसी सांई की मसल हुई जिस ने सिपाही की नौकरी की थी और लड़ाई को देखकर यों कहा था ।

" तुनतुनी वजाते मियां खाते शक्कर घी ।
इस नौकरी की ऐसी तेजी अब के बचे जी ॥
(जाता है) इति

निकृष्ट नौकरी ।

नाटक ।

मंगला चरण ।

सूत्रधार - (अपनी नटी से) आज इस रंगशाला की कैसी अपूर्व शोभा बनी है अंगरेज़ी पढ़े हुये बाबू लोग नंगे सिर ढीली धोती पहने डुपट्टा ओढ़े बूट चढ़ाये और हिन्दुस्तानी अम्मामें बांधे पैजामें पहने, चपकन डाटें, घड़ियां पाकट में डाले हुए बराबर २ बैठे हुए कैसी शोभा दे रहे हैं; प्रिये इन्हें कोई बहुत सुन्दर तमाशा दिखा कर प्रसन्न करना चाहिये ॥

नटी—स्वामी ! आपने बहुत सुन्दर विचार किया है देखिये यह समय भी कैसा शोभायमान है मेघ गरज रहे हैं, धीमी २ बरषा हो रही है कैसी प्यारी सीतल मंद पवन बह रही है, हरे २ वृक्ष कैसी झकोरे ले रहे हैं पक्षी और कोयल कैसे मगन होकर किलोलें कर रहे हैं, तड़ाग और कूए कैसे बढ़ आये हैं । स्वामी इन महाशयों को कोई ऐसा अभिनय आज दिखाइये
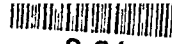
जिस से इन्हें केवल प्रसन्न ही नहीं बरन उपदेश भी हो ॥

सूत्रधार प्रिये आज कल समय का ऐसा रंग बिगड़ गया है कि जिस विद्वान शिक्षित जन को देखिये वह संसार के सब उत्तम २ व्योपार बनिज आदि उदास छोड़ कर नौकरी ही करने को कमर बांधे है मानो उस से बढ़कर संसार में और कोई प्रतिष्ठित और माननीय जीविका प्राप्ति करने का द्वारा नहीं है, परन्तु जैसी कुछ कुदशा भलेमान्सों को इस नौकरी में होती है वह वही भली भांति जानते हैं इन को नौकरी के महा दोष दिखलाने के लिये प्रिये हमारा विचार है कि निकृष्ट नौकरी नाटक का तमाशा करें जो श्री लाला दयालदास जी खत्री कवि आगरा नगरनिवासी के परम विद्वान और चतुर पुत्र श्रीयुत बाबू काशीनाथ जी का रचा हुआ है ॥

(परदे के भीतर दोनों चले गये)

(दफ्तर के कमरे में भरोसदास रैटर बड़े ध्यान से एक सरकारी चिट्ठी को नकल कर रहे हैं इतने ही में उम्मेदचन्द उनकी कुरसी के पास आन खड़े हुए और मित्र भाव से पूछने लगे ॥

उम्मेदचन्द – कहो उसताद सब चैन चान ॥

भरोसदास—क्या चैन चान यार ! तख़फ़ीफ़ की ख़बरें प्रान मारे डालती है देखिये इस में कौन जाता है और कौन रहता है, नोकरी क्या है एक हत्या है रोज़ एक न एक उपद्रव ही उठा करते हैं ॥

(इतने में ही बाबू निष्कपट मुकरजी बड़े क्लार्क साहब को उस कमरे में हुक्का पीने का सुबीता देखकर आ गये) ॥

निष्कट बाबू—वेल, आप लोग क्या गोलमाल कर रहा है झमकू फराश की तरफ इशारा करके) तुमारे यहां आगी है ॥

भरोसदास -(बाबू साहब से) बैठिए बाबू साहब फराश हुक्का भरता है। कहिये आप तो साहब के पास रहते हैं यह रिडकशन (Reduction) किस किस का प्रान लेगी ॥

" निष्कपट बाबू—(ज़रा धीमी आवाज़ से) हम अभी कापी करके आया है आज सब लिख पढ़ गया मिस्टर फ़्लाईकिलर (Fly-killar) साहब ने गवर्नमेण्ट को रिपोर्ट किया है कि १० चपरासी २ दफ़तरी, ४ रैटर इस दफ़तर में तकफ़ीफ़ होंगे " ॥

भरोसदास - (कलेजा धड़कता हुआ) चार रैटर भी तकफ़ीफ़ में आये। बताइये तो कौन कौन ॥

दाबू -(जी में सोचता हुआ कि आज सवेरे २ कौन ऐसी दुखदाई खबर सुनावे कहने लगा) (प्रगट) हमे नहीं याद आप ही सब खबर शाम तक खुल जायगा ॥

भरोसदास—वाह ! आप ज़रूर जानते होंगे क्योंकि आप ही ने तो उस चिट्ठी की नकल करी ॥

दाबू -(जी में पछताता हुआ कि नाहक मैं ने उस चिट्ठी के नकल करने का हाल इन से कहा) (कुछ हमदरदी की आवाज से) उस में तुम्हारा भी नाम है । (यह सुनते ही बिचारे भरोसदास का रङ्ग जर्द हो गया और बड़े ज़ोर से कलेजा धड़कने लगा आंसू आंखों में भलकने लगे परन्तु उन्हें रोककर चित्त को दृढ़ करके कहने लगा) ॥

भरोसदास—खैर साहब इस में हमारा क्या चारा है ईश्वर की मरजी यही है तो हमारा क्या बस है (शोक से गरदन नीचा किए हुए मन ही मन में) हे ईश्वर तू ने यह बड़ी बिपत डाली घर में इतना भी नहीं है कि दस पांच महीने बैठकर खायेंगे, और बीस रुपये महीने में क्या खाते और क्या बचाते, इतने ही में कठिनाई से गुज़र होती थी नौकरियों का यह हाल है कि एक खाली होती है तो सौ गिरते हैं कुछ अपने को इतना इल्म भी नहीं कि जहां खड़े हों

वहां हमारी ही पहले पूछ होय और न कोई अपना ऐसा सुरव्बी है कि वह हमे कहीं कह सुनकर भरती करा दे गरीबों का अल्ला ही वेली हैं । भगवान क्या करें कहां जायं किस के आगे अपना दुख रोयें मि. फ्लाइकिलर साहब भी महा हत्यारा निकला उसको दफ्तर के २०० या १५० आदमियों में मारने के लिये हमहीं दुखिये रह गये थे जिन को कहीं सरन नहीं रिक्मनडी (Recommendee) साहब चौबीस बरस के नौकर हैं ५००) महीना पाते हैं कि दिन भर बैठे चुरट पिया करते हैं या फर्स पर टहला करते हैं कही अगर फ्लाइकिलर साहब इन को पेन्शन देकर उनको असामी तकफीफ कर देते तो यह दस बीस दुखिये सहज में बच जाते और रिक्मनडी (Recommendee) साहब को भी घर बैठे गुड सरविस पेनशन (Good service pension) के २५०) मिलते पर कहै कौन वह भी गोरे रंग के हैं वह भी गोरे रंग के । भला रिकमंडी साहब क्यों ५००) से २५०) पसन्द करेंगे ? वह भी तो उन्हें पिनशनही है दिन भर में एक दो दफे दस्तखत कर दिया बस नौकरी हो गई भाई बन्दी तो सभी जगह चलती है भला बड़े साहब क्यों रिकमण्डी साहब को पेनशन देंगे जब उन्हें मंजूर ही नहीं

आखिर को तो नाम का प्रभाव कहां जाय, नामही उनका है मक्खीयों के मारनेवाले (इसी सोच में चार बज गए अपनी लकड़ी उठाकर चुपके से घर की तरफ चले रास्ते में ऐसेही संकल्प विकल्प करते हुए घर पहुंचे और बिना किसी से बोले हुए खाट पर लेटकर हुक्का पीने लगे) ॥

स्त्री—(देखकर कि आज इतनी देर हुई अभी भोजन करने को नहीं उठे ज़रूर कुछ न कुछ बात है या तो कुछ न कुछ काम बिगड़ गया है या कहीं साहब ने घुड़का है रसोई में बैठी हुई कहने लगी) प्यारे के लाला। आज सुस्त क्यों पड़े हो ?

भरोसदास—(उदासी से) कुछ नहीं योहीं लेटा हुआ हूं ।

स्त्री—(दुख की भरी बोली से जानकरके कि कुछ न कुछ ज़रूर दाल में काला है रसोई से निकल कर और उनके पास आन कर बड़े स्नेह से बोली) कहो तो क्या बात है ?

भरोसदास—क्या कहें हमें तो भगवान उठा लेता तो रोज़ के फिक्रों से छुटते, इतनेही में तंगी से दिन कटते थे सो आज वह नौकरी भी हाथ से गई हमारी असामी भी तकलीफ़ में आ गई इस फ़ाइलर साहब का सत्यानाश होय इसी ने हमारी रोटी खोई ॥

स्त्री (ठंडी सांस भरकर और कुछ देर चिन्ता में डूबी रहकर आंखों में आंसू भरकर धीमी प्यारी आवाज़ से कहने लगी) तो जाने दो अब सोंच क्यों करो हो, पौरष सलामत चाहिये जिस भगवान ने पैदा किया है क्या खाने को न देगा, और कहीं नौकरी देख लेना, चलो उठो रसोई ठंढी होय है ॥

भरोसदास – हां उठूं हूं (यह कहकर फिर शोक में डूब गये (स्त्री हाथ धोकर फिर चौके में चली गई) ॥

स्त्री –(कुछ देर के बाद चौके में से) अजी फिर ठैर गये भला अब नाहक फिकर करके अपने चित्त को क्यों दुखी करो हो भगवान सब को भूखा उठावे है पर भूखा सुलाता नहीं कहीं सवेरे से संध्या तक मेहनत करोगे तो क्या पेट को अन्न न जुड़ेगा नौकरी गई तो जाने दो चलो उठो हाथ पांव धो ॥

(बिचारे भरोसदास चित्त में बड़े निराश हो के खाट से उठकर हाथ पांव धोकर चौके में जाते हैं) ॥

भरोसदास – (भोजन करते २) देर सवेर कहीं न कहीं नौकरी मिलही जायगी परन्तु बड़ा फिक्र तो अब यह है कि तब तक गुज़ारा कैसे चले अपना कोई भाई बंद भी ऐसा नहीं कि तब तक कुछ हमारी मदद करे हमारे चचेरे भाई निरदईराय कुछ मकदूर वाले हैं सो उन

.का तुम हाल जानती ही हो उन से हज़ार दरजे ग़ैर लोगही अच्छे उनकी स्त्री कुछ उन से भी बढ़कर है अगर कभी हमारा लड़का भूलकर उनके घर निकल जाय तो पानी तक न पिलावें ॥

स्त्री - ऐसे आदमियों के सामने हाथ फैलाना मौत से ज्यादा है चाहे हम भूखे अपने घर में सो रहेंगे परन्तु ऐसे लोगों से अपना दुख सुख न कहने जायंगे, अभी दो तनखाहें तुम्हारी सरकार में चढ़ी हुई हैं कुछ घर में है और जो ज़रूरत होगी तो मेरा ज़ेवर है (यह कहते हुए आंख में आंसू भर आये) ॥

भरोसदास—(मन ही मन में कुछ चित्त में ज्ञान और वैराग्य लाकर और चैतन्य होकर) 'चिन्ता करना वृथा है वह नारायण पशु पच्ची कीड़े मकोड़े तक को नित्य चारा पहुंचाता है. क्या हम मनुष्य होकर भूखे मर जायंगे एक स्त्री का फ़िक्र है नहीं तो हम जहां निकल जाते वहां सब कुछ कर लेते' ॥

(इसी सोच में भरोसदास सो गये दूसरे दिन नित्य नियमानुसार भोजन करके दस बजे कचहरी पहुंचे हुकुम सुनकर घर चले आये और पहली तारीख़ को फिर जाकर अपनी बाकी तनख़ाह ले आये ॥

इसी तरह बेकार बैठे हुये कुछ दिन व्यतीत हुये, एक रोज एक मित्र ने आनकर खबर दी कि हौटी (Haughty) साहिब के दफ़्तर में एक असामी खाली है यह सुनतेही झटपट सम्हाल २ कर एक अर्ज़ी लिखकर चले।

भरोसदास—(मन में चलते हुये) अगर अभी तक किसी दूसरे की सिफारिश न पहुंची होगी तो बनही गई है हे महावीर महाराज! अगर साहब मेरी अर्ज़ी मंजूर कर लें तो तुम्हें पांच सेर प्रसाद चढ़ाऊँ (ऐसेही सोचते हुये दफ़्तर में साहब के कमरे के सामने पहुंचकर बड़ी धीमी आवाज़ से अर्दली के चपरासी से पूछते हैं) क्यों भाई, साहब आ गये?

चपरासी—हां भीतर बैठे हैं।

भरोसदास—भाई मेहर्बानी करके हमारी इत्तला कर दो।

(मियां धक्केखां चपरासी यह सुनकर जी में खुश हुये कि आज सवेरेही सवेरे एक असामी मिल गई परन्तु यह सोचकर कि कोई सीधे २ अपनी गाँठ से पैसा नहीं खोलता नाक भौं सिकोड़ कर कहने लगे)

चपरासी—चलो जो अपना काम करो क्या हमारा रोज़गार लोगे, देखते नहीं हो साहब लिख रहे हैं अभी मैं इत्तला करूं तो खफा होने लगें।

भरोसदास—(मन में) अभी मालूम होता है कि कोई

और उम्मेदवार नहीं आया इस वक्त बिना कुछ दिये काम कभी न बनेगा चुपके से एक अठन्नी पाकेट से निकालकर मुट्ठी बन्द करके चपरासी मियां को देने लगे।

चपरासी देखूं क्या है खोलो तो सही।

(भरोसदास मुट्ठी खोलकर अठन्नी दिखाते हैं)

चपरासी—अरे लाला हम अठन्नी लेनेवाले नहीं हैं यह भी क्यों खराब करते हो घर के काम आवेगी।

भरोसदास --(हाथ जोड़कर) भाई मैं बहुत दिनों से बेकार हूं मेहर्वानी करके इसे लीजे अगर साहब मेरी अर्जी मंजूर कर लेंगे तो मैं पीछे से तुम्हें खुश करूंगा।

चपरासी—खैर लाओ मगर भूल मत जाना।

चपरासी चिक उठाकर भीतर जाता है और दोनों हाथ जोड़कर साहब से कहता है—"खुदावन्द एक आदमी हुजूर के वास्ते खड़ा है हुक्म हो तो आवे।

साहब—वेल आने दो।

(चपरासी के इशारा करने पर भरोसदास दिल धड़काते और सांस फूलते हुए जूता उतार कर भीतर जाते हैं और झुककर बन्दगी करके छोटी साहब के सामने अपनी अर्जी रखते हैं)।

(साहब बहादुर अर्जी के पढ़तेही आग बबूला हो गये और क्रोधित होकर कहने लगे)।

छोटी साहब—Why do you trouble me in vain there is no vacancy in my office. (हमें तुम लोग क्यों दिक करते हो हमारे दफ्तर में कोई असामी खाली नहीं है)।

(विचारे भरोसदास निरास होकर बहुत झुककर सलाम करके बाहर निकल आये इतनेही में और सब दफ्तर वाले आगये उन में से एक बाबू निन्दक राम से जिन से जान पहिचान थी वे पूछने लगे)।

भरोसदास क्यों साहब आप के यहां एक असामी खाली थी उस पर कौन हुआ ?

बाबू निन्दकराम—यार तुम अपने घर जाओ इस भ्रम-जाल में पड़ के क्या करोगे, ठाकुर निजमतलबसिंह सिंह के सामने यहां किसी की नहीं चलने पाती, वह आज कल छोटी साहब के नाक का बाल हो रहा है जिसको चाहे निकलवा दे जिस्को चाहे भरती करवा दे। साहब ने आंख मूंद कर सब स्याह सुफेद उसके हाथ में कर दिया है, जो हेड्क्लार्क करे सो सब साहब को मंजूर है इस राक्षस के मारे सब दफतर का दम नाक में आ रहा है इस दुष्ट को न हैज़ा होवे न बुखार आवे हम ग़रीबों के सताने के लिए यह मानो जमराज प्रगटा है अभी कल बिचारे गरीब निस्सरन

दास को विला कसूर मौकूफ करा दिया है और उस की जगह अपने वहिनोई कुलविनाशचन्द्र को जिस को कलम पकड़ने तक का शहूर नहीं है मुकर्रर करा दिया है अब मैं जाता हूं दस बजा चाहता है। (वंदगी करके जाता है)।

भरोसदास—(मन में) हम तो पहिलेही सोचकर चले थे कि विना सिफारश कहीं काम नहीं चलता भला हेडक्लार्क अपने साले वहनोइयों को नौकर करावेगा कि हमें। खैर जी गरीवों का भी भगवान है कहीं न कहीं नौकरी लगही जायगी। (निरास होकर घर चले आये, स्त्री से कुछ न कहा और सो गये)।

थोड़े दिन वाद एक मित्र उपकारमल ने खवर दी कि होट टेम पर्ड (Hot-tempered) साहव इंजीनियर के दफ्तर में एक नकलनवीस की आसामी खाली है, परन्तु उसने यह भी जता दिया कि उसके दफ्तर में कोई वहुत दिन नहीं जमता, वह वड़ा डंडेवाज़ है, हर शकस को गाली दे वैठता है और मार देता है, इस सवव से कोई भलामानस उसके दफ्तर में नौकरी के लिये नहीं जाता पुराने क्लार्क उसकी आदत जान गये हैं, जीव से प्यारी सव को जीविका होती है इसलिये वे विचारे सव उसकी सहते हैं, क्या करें कोई चारा नहीं देखो जाओ वह

नौकरी हो जाय तो अच्छा है बहुत दिन बेरोजगारे बैठे हुये तुन्हे हो गये ।

भरोसदास - अरे यार उपकारमल ! बेकसूर किसी को क्यों मारता होगा लोगों का कायदा है कि एक दफे किसी से कुछ हो जाता है तो हमेशा के लिये उसे बदनाम किया करते हैं कल मैं जाकर किस्मत आज़-माई करूंगा ।

उपकारमल - हां जरूर जाना यह लोगों की गप्प है कुछ उसका सिर तो फिरताही न होगा कि सबको मारता ही फिरे, उसमें यह एक बड़ा गुण है कि वह सिफा-रश के नाम से चिढ़ता है ।

भरोसदास तो तो यार हमारी बन पड़ी सिफारशियों के मारे तो हमें कहीं सरन ही नहीं थी, जहां जाता हूं वहां कोई न कोई सिफारिशी पहिले ही घुस बैठता है ।

(उपकार मल बंदगी करके जाते हैं भरोसदास प्रातः काल बहुत सफ़ाई से अर्ज़ी लिखकर अपनी सरटिफ़िकेट रूमाल में लपेट इम्मामा बांध बूट चढ़ा छुबड़ी सम्हाल चुगा डाल हनूमान जी को मनाते हुये साहब के बङ्गले की तरफ़ चले बङ्गले के फाटक पर पहुंच कर एक अंगरेज़

को बाग की रौस पर टहलते हुए देखकर भरोसदास एक बुखारबक्स भिश्ती से जो पासही कूंए पर पानी भर रहा था पूछने लगे)।

भरोसदास—मियां साहब बंदगी आप का नाम क्या है ?

बुखारबक्स—मेरा नाम बुखारबक्स ।

भरोसदास—क्यों मियां बुखारबक्स यह कौन साहब टहल रहे हैं ?

बुखारबक्स—यह हटम्पर साहब हैं।

भरोसदास—मैं उनके पास चला जाऊं कुछ हर्ज तो नहीं ?

बुखारबक्स—ऐ है! कहीं ऐसा मत करना यह बड़ा जल्लाद अंगरेज़ है छूटतेही डंडा मारेगा पहिले किसी से इत्तला करा दो।

भरोसदास -(मन में) यह भिश्ती की बनावट है अलवत्ते अंगरेज़ों को जब बुरा लगता है और तैश में आ जाते हैं जब कोई अजनबी काला आदमी उनके पास उस वक़्त चला जाय जब वे अपनी मेम के पास खड़े हों और प्यार से बातें कर रहे हों इस वक़्त साहब अकेले हैं चलना चाहिये कुछही क्यों न हो मौका हाथ से न खोना चाहिये एक छड़ी मार भी देगा तो कुछ हमारी चूड़ियां थोड़ेही फूट जांयगी अगर ऐसे ही डर कर घर बैठ रहा कर तो बस नौकरी कर चुके।

भरोसदास—(राम राम मन में कहते हुये और कलेजा जोर २ से धड़कते हुये फाटक के भीतर घुसे, दो चार

कदम चल के मेंहदी की ओट में खड़े होकर साहब का चेहरा देखने लगे कि देखें इस वक्त गुस्से में तो नहीं हैं) टकटकी लगाकर बड़े ध्यान से ओट में से देखते हैं) भरोसदास, (मन में) साहब का चेहरा खुश तो मालूम होता है, मगन होकर सीटी बजाता है और लकड़ी घुमा रहा है देखो देखो वह काहे को अभी झुका अपने पास के गुलाब में से फूल तोड़ता है अब तो अच्छा मौका है चलना चाहिये (लंबे लंबे डग भर कर रविश पर जाते हैं)

साहब जूते की खटखट की आवाज़ सुनकर टहलते हुए ठहर गये और भरोसदास को अपनी तरफ आते हुए देखकर बड़े क्रोध से आंख चढ़ाकर लकड़ी उठाकर सुर्ख मुंह करके छटक के बोले । साहब — Whoare you ? (तुम कौन हो) ?

(भरोसदास के यह क्रोध मय बानी सुनतेही होश बिगड़ गए और मन में कहने लगे कि आज भले कमबख़्त का सवेरे मुंह देखकर चले थे अब क्या यह बे कुबड़ी चलाए मानेगा. परन्तु फिर होश सम्हाल कर बड़ी नम्रता से बन्दगी करके साहब के हाथ में अर्ज़ी देकर कहने लगे. Sir, I am a candidate for the post vacant in your office. (साहब मैं उम्मेदवार हूं) ।

(अर्ज़ी पढ़कर कुछ देर के बाद मुलायम आवाज़ से साहब कहने लगे) ।

साहब - Show me your testimonials. (हमें अपनी सनदें दिखाओ)।

(साहब के शीलता से यह शब्द उच्चारण करते हुए सुनकर भरोसदास के प्रान ठिकाने आये वे अपनी चिट्ठियां रूमाल में निकाल कर साहब को दिखाते हैं और वे ध्यान से उन्हें पढ़कर उसे फेरकर देते हैं और कहते हैं)।

साहब - Well, come to the office at ten-o'clock. (दस बजे दफ़तर में हाजिर हो)।

यह कहकर उसकी अर्ज़ी अपनी जेब में रख ली और फिर टहलने लगे।

भरोसदास (रास्ते में मन ही मन में) धन्य है भगवान आज बड़े दिनों बाद तू ने इस गरीब की दुआ कबूल की देखो क्या ही शरीफ़ यह अंगरेज निकला देखते ही अर्ज़ी ले ली. वे बड़े बेवक़ूफ़ हैं जो ऐसे भले मानस को बदनाम करते हैं ईश्वर इसका भला करे।

(जलदी २ घर जाता है कि रोटी खाकर दस बजे दफ़तर पहुंचे) (घर पहुंच कर प्रसन्नता से स्त्री से बोले) जलदी रसोई चढ़ा दफ़तर जाना है।

स्त्री (आनंद मय बानी सुनकर पहचान करके कि आज कहीं तार लग गया पूछने लगी) कहो क्या हुआ हटम्पर साहब के बङ्गले पर गए थे मुलाकात हुई ?

भरोसदास—हां ! अर्ज़ी ले ली और दफ़तर में बुलाया है

अब मंज़ूर होने में कुछ संदेह नहीं है देखिये काम चले है कि नहीं।

स्त्री (अत्यन्त प्रफुल्लित होकर) धन्य भगवान, हनूमान जी का प्रसाद दफ़तर मे आते ही चढ़ा देना काम की क्या है जी सब चल जाय है काम को काम सिखा लेता है।

(अंगीठी से आग निकाल कर चूल्हे में सुलगाती है और झट पट रसोई तैयार करती है भरोसदास भोजन करके दफ़तर को जाते)।

भरोसदास—(कमरे में जाकर एक बाबू से जो बैठा हुआ था पूछते हैं) बाबू साहब आप क्या काम करते हैं?

बाबू—(बिना उसकी तरफ़ देखे हुए) मैं हैड्क्लार्क हूं।

भरोसदास—आप का नाम क्या है?

बाबू—ईर्षाभस्मचाटुरजी।

(इतने में कड़ कड़ बग्गी के पहिये की आवाज़ सु-नाई दी।

बाबू—(कागज़ सम्हालते हुए) वेल तुम सोधा हो बैठो साहब आता है।

(साहब कमरे में खट खट करते हुए आते हैं और भरोसदास को बंदगी करते हुए देखकर लौटते हैं और बाबू से कहते हैं। Give him the books and the papers of that Mohemaden chap dismissed yesterday.

(इन को उस मुसलमान के कागज़ और किताब दे दो जो कल मौकूफ़ हुआ है)।

बाबू Very well sir, (बहुत अच्छा साहब)।

बाबू (डाह से भस्म होता हुआ मन में) कि हमने तो यह असामी अपने साले सुखदास बानरजी के लिये तजवीज़ की थी यह पहिले कहां घुस आया भला यह कहां बच के जायगा पिटवा के न निकालूं तो मेरा नाम ईर्षा भस्म नहीं।

भरोसदास बाबू साहब वह किताबें मुझे बता दीजिये तो मैं काम करूं।

बाबू —(क्रोधित होकर) ठैरो जी जल्दी क्यों करते हो।

भरोसदास (मन में) देखा चाहिये कैसे निभती है यह हेडक्लार्क तो बड़े ही तेज मिज़ाज दीखते हैं अपने को रुस्तम खां ही समझते हैं।

(थोड़ी देर बाद बाबू किताबें देते हैं और बतलाते हैं और दूसरे हाथ में कागज़ लेकर कहते हैं कि यह सब इस में नकल होगा; भरोसदास उन्हें लेकर अपनी जगह जाते हैं और कुछ देर बाद किताब के वर्क उलट कर बाबू से पूछते हैं)।

भरोसदास—क्यों साहब यह चिट्ठियां इस कालम में नकल होगी।

बाबू —(हिकारत की नज़र से) ओः हो: तुम नौकरी

करने निकला है ऐसी मोटी बात नहीं जानता (बतला कर) यहां नकल होगा।

(ऐसेही खटपट होते हुए कुछ दिन व्यतीत हुए बाबू साहब घात में थे कि कोई अवसर हाथ लगे कि भरोसदास ज़रा साहब के डंडे का स्वाद चक्खे अभी पोली पोलीही खाई है बाबू ईर्षा भस्म एक दिन अवसर पाकर और देखकर कि साहब गुस्से में हैं भरोसदास की किताब उठा ले गये और उनके सामने रखकर कहने लगे।

बाबू—Sir, please see that he has spoiled the whole book.

(देखिये, साहब इसने कुल किताब ख़राब कर दी)।

(बस बाबू का यह शिकायत करना था कि साहब लाल हो गये और ज़ोर से कहने लगे)।

साहब चपरासी ! छोटे बाबू को बुलाओ।

चपरासी—" बहुत अच्छा खुदावंद " (कह के जाता है और भरोसदास को बुलाकर लाता है।

साहब—(भरोसदास को बंदगी करते हुए देखकर) (डबल घूसा उठाकर और नाक पर तान कर)

बेवकूफ़ अगर तुम रोज़ गलतियां करेगा तो फौरन मौकूफ़ कर दिये जायगा।

D-m I will dismiss you, if you commit such mistakes again.

भरोसदास—(दोनों हाथ जोड़कर बड़ी गरीबी से) खुदा-

बंद कुसूर हुआ आयंदह को बड़ी होशियारी से लिखूंगा।

(किताब उठाकर बंदगी करके अपनी जगह पर जाता है।

भरोसदास—(कुरसी पर बैठे हुए मन में) हाय ! राम क्या अंगरेजी पढ़कर मट्टी ख़राब है दिन भर चक्की पीसनी पड़ती है और फिर भी हेडक्लार्क की हर वक़्त झिड़कियां सहनी पड़ती है अगर ज़रा बोलो तो साहब का कान फूकने को तैयार हो जाता है साहब का यह हाल है कि बात २ पर मौकूफ़ करते हैं और गाली दे बैठते हैं धिक्कार है उन पर जो ऐसी नौकरी पर घमंड करते हैं जिस की न कुछ जड़ न बुनयाद, अरे क्या हमारे बाप दादे सब अंगरेज़ ही की नौकरी करते आये हैं ? क्या वह रोटी नहीं खाते थे वाह वाह ! क्या हमने अंगरेज़ी पढ़कर कुल को स्वर्ग में चढ़ा दिया नहीं जी बिचारी अंगरेज़ी का क्या दोष है दोष तो हमारा है कि सिवाय नकल करने के और कुछ नहीं लिख पढ़ सके देखो विद्यानचन्द हमारे साथ का उसने खूब मेहनत करी हाईकोर्ट में मुत-रज्जिम की असामी पर १५०) फटकारता है मकदूर है कि कोई उसे डेमफूल कहे यह मट्टी तो हम कम पढ़ों कि ख़राब है जो न इधर के न उधर के, यह नौकरी काहे को है गुलामी ठहरी इससे तो हज़ार दरजे अपने घर का उद्यम अच्छा, और कुछ न होगा

जहां तवा दो थान मारकीन के बाज़ार में ले बैठेंगे तब भी चार आने के टके सीधे करके उठेंगे किसी द गालियां तो न सहनी पड़ेंगी परन्तु अब पढ़ लिख वह भी तो नहीं हो सकता अभी ऐसा करें तो लो कहने लगे कि

पढ़े फारसी वेचे तेल
यह देखो कुदरत का खेल

सब तरह से ख़राबी है दुनियां को यों चैन न वों चैन कहिये अब क्या किया जाय और कुछ दिन देखते हैं अगर यही हाल रहा और अपना कुछ सुभीता कहीं और हो गया तो इस महा हत्या के नौकरी की ऐसी तैसी सच किसी बुद्धिमान ने कहा है ॥

उत्तम खेती मध्यम बाज
निकृष्ट नौकरी विपत्त निदान

॥ इति ॥